यीशुः क्रूसारोहण

क्रूस का विषय कभी कमज़ोर नहीं पड़ सकता। नीचे दिए गए शब्द अध्ययन और प्रचार के लिए सहायता में यीशु के दुख उठाने और क्रूस पर उसकी मृत्यु की घटनाओं के विषय में आपकी समझ को बढ़ाने के लिए हैं।

क्रूस की धारणाएं

गुलगुता

यरूशलेम की दीवार के बाहर के स्थान को जहां यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था आरामी भाषा के शब्द *गुलगुता* (मत्ती 27:33) से पुकारा जाता था, जिसका अर्थ है ''खोपड़ी।'' आरामी भाषा का यह शब्द खोपड़ी के आकार के कारण इब्रानी भाषा के क्रिया *गलल* से लिया गया था जिसका अर्थ ''गोल'' है। मत्ती, मरकुस और यूहन्ना ने *गुलगुता* का अनुवाद ''खोपड़ी'' *kranion* (अंग्रेज़ी भाषा के शब्द ''cranium'' पर विचार कीजिए जिसका अर्थ खोपड़ी है) के लिए यूनानी शब्द से किया था। ''खोपड़ी'' के लिए लातीनी शब्द *कलवरिया* है जिसे चौथी शताब्दी के लातीनी संस्करण में जिरोम ने इस्तेमाल किया था। अंग्रेज़ी भाषा के किंग जेम्स वर्ज़न के अनुवादकों पर जिरोम की लातीनी बाइबल का प्रभाव था, क्योंकि उन्होंने लूका 23:33 में लूका के यूनानी शब्द *क्रेनियोन* का अनुवाद करने के बजाय लातीनी शब्द का अंग्रेज़ीकरण करके इसे ''कलवरी'' लिख दिया था।

जिरोम ने कहा है कि इसे *गुलगुता* इसलिए कहा जाता था कि वहां बहुत सी खोपड़ियां पड़ी रहती थीं। थेयर ने कहा है कि इस स्थान को ''ऐसा इसलिए कहा जाता था क्योंकि यह खोपड़ी जैसा लगता था।''[1] बहुत से लोगों का विचार है कि यरूशलेम के बाहर खोपड़ी के आकार की पहाड़ी, जिसे अब ''गोर्डन की कलवरी'' कहा जाता है, ही वह स्थान था, जहां यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था।

सूर्य ग्रहण

मत्ती 27:45 कहता है, ''दोपहर से लेकर तीसरे पहर तक उस सारे देश में अन्धेरा छाया रहा।'' यीशु यहूदियों के फसह के समय मरा था (मत्ती 26:2), जो कि पूर्णचन्द्र का समय था। प्रकृति के अनुसार, जब चन्द्र सूर्य से पृथ्वी की विपरीत दिशा में होता है तो सूर्य ग्रहण नहीं लग सकता। इसलिए यह दावा नहीं किया जा सकता कि यीशु की मृत्यु के समय पृथ्वी पर अंधकार प्राकृतिक सूर्य ग्रहण के कारण हुआ था। फिर भी यदि प्राकृतिक ग्रहण

लगने की कोई सम्भावना भी हो, तो वह केवल कुछ ही मिनटों के लिए रहना था, तीन घण्टे तक नहीं। एलबर्ट बार्नस ने एक रोमी ज्योतिषी फलेगोन को यह लिखते हुए उद्धृत किया है कि तिबरियुस के चौदहवें वर्ष में ''सूर्य को सबसे बड़ा ग्रहण लगा था ... क्योंकि दिन रात में इतना बदल गया था कि तारे दिखाई नहीं दे रहे थे।''[2]

इतिहास की सबसे दुखद घटना के समय, परमेश्वर ने चमत्कारिक ढंग से सूर्य के प्रकाश की चमक निकाल ली थी और अपने इस संसार पर शोक का कपड़ा डाल दिया था। दोपहर बारह बजे से तीन बजे तक, परमेश्वर ने स्वर्ग के शोक का एक काला झण्डा दिखाया था।

क्रूस

क्रूस का आकार चाहे ''X'' (*crux decussata,* ''संत आन्द्रियास का क्रूस''), ''T'' (*crux commissa,* ''संत अंथोनी का क्रूस''), ''t'' के आकार का हो जिसमें क्रूस के लट्ठे के ऊपर लम्ब खिंचा हो (*crux immissa*), या ''I'' (*crux simplex*) था, इस पर व्यापक चर्चा हो चुकी है। यह तथ्य पीलातुस की आज्ञा से यीशु के सिर पर लिखे दोषपत्र (तीन बार लिखे, कई शब्द) से लगता है कि क्रूस के लट्ठे के ऊपर लम्ब की लकड़ी पर कील ठोंकने के लिए जगह थी, जिससे यह *crux immissa* या *crux simplex* बनता है।

यद्यपि कुछ लोगों का विचार है कि यीशु की देह को सहारा देने के लिए क्रूस के साथ एक खूंटी लगाई गई थी, परन्तु ऐसा लगता नहीं है। उसके हाथों में ठोकी गई कीलों पर उसके शरीर का भार पड़ने से आने वाले खिंचाव को देखकर उसे सताने वाले प्रसन्न हो रहे होंगे।

एली-एलियास

जब यीशु ने, ''एली, एली'' (''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर'') पुकारा, तो पास खड़े हुए कुछ लोगों ने सोचा कि उसने, ''एलियास, एलियास'' (''एलिय्याह, एलिय्याह'') कहा है। यद्यपि यीशु ने ऊंचे स्वर से पुकारा था, परन्तु उसके शब्द स्पष्ट नहीं थे। जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे के अनुसार पास खड़े लोगों को गलती ''उसकी भाषा को न जानने से नहीं, बल्कि यीशु के अस्पष्ट शब्द उच्चारण से'' लगी थी।[3] यह बात सही हो सकती है, क्योंकि यीशु लगभग छह घण्टों से क्रूस पर था। दोनों हाथ खींचकर ऊपर की ओर बन्धे होने के कारण उसकी छाती की मांसपेशियों पर दबाव पड़ने से खून की कमी और गला सूखने से उसकी आवाज़ अस्पष्ट हो गई होगी।

लहू और पानी

डब्ल्यू. रॉबर्टसन निकोल ने कहा था कि यीशु की पसली में जो भाला मारा गया था वह सम्भवत: एक *logche* था जिसका मुंह लोहे के अण्डे के आकार का और आदमी के सिर

जितना चौड़ा था।[4] एल्बर्ट बार्नस ने वर्णन किया है कि हृदय के चारों ओर की झिल्ली अर्थात पेरिकार्डियम पर लगने के कारण पानी और लहू यीशु के शरीर से बह निकले थे: ''इस झिल्ली [पेरिकार्डियम] में पानी जैसा एक महत्वपूर्ण तत्व होता है, ... जो अपनी निरन्तर गति से हृदय के तल को सूखने से बचाता है।''[5]

द फिज़िकल कॉज़ ऑफ़ द डैथ ऑफ़ क्राइस्ट में डॉ. विलियम स्ट्राउड ने एक बिल्कुल ही अलग थ्योरी सुझाई है। स्ट्राउड के अनुसार हृदय गति रुकने के कारण यीशु पहले ही मर चुका था जिससे भाला लगने से पहले ही स्वाभाविक फूटन हुई। स्ट्राउड की थ्योरी यह थी कि स्वाभाविक फूटन के बाद पेरिकार्डियम में लहू बहने लगा था। पेरिकार्डियम में भाला लगने पर यह लहू, अधिक तरल व ठोस भागों में विभाजित हो गया था। एक भाला अर्थात logche बिना हड्डियां तोड़े यीशु की पसली में कैसे जा सकता था? शायद यह पसली के नीचे से घुसेड़कर ऊपर की ओर ठूंसा गया था।

क्रूस की अभिपुष्टि

स्वतन्त्र वर्णन

क्रूसारोहण का समय। कुछ लोगों ने दावा किया है कि मरकुस 15:25-33 तो संकेत देता है कि छठा घण्टा आने पर यीशु क्रूस पर तीन घण्टे तक रहा था, पर यूहन्ना 19:14 यीशु को अभी भी छठे घण्टे में पीलातुस के आंगन में रखता है। परन्तु, यदि कोई यह मानता है कि यूहन्ना रोमी समय का इस्तेमाल कर रहा था (जिसका संकेत यूहन्ना 20:19 देता है) और मरकुस यहूदियों के समय का, तो इसमें कोई कठिनाई नहीं है। यीशु प्रात: छह बजे पीलातुस के आंगन में ही था, लगभग 9 बजे क्रूस पर था और दोपहर को (यहूदियों का छठा घण्टा) तीन घण्टे तक क्रूस पर था। सुसमाचार के मरकुस और यूहन्ना के वृत्तांतों में कोई विरोधाभास नहीं है। बल्कि उनका अन्तर आकस्मिक प्रमाण देता है कि ये पुस्तकें एक दूसरे की सहायता लिए बिना लिखी गई थीं।

पित्त और गंधरस। कुछ लोगों का विचार है कि मत्ती ने यह दावा करके मरकुस का विरोध किया कि जिस दाखमधु को यीशु ने चखा था और उसे लेने से इन्कार कर दिया था उसमें पित्त मिला हुआ था, जबकि मरकुस ने कहा कि इसमें गंधरस था। परन्तु यह सम्भव है कि छह घण्टे तक लटकने के दौरान यीशु को एक से अधिक दाखमधु का मिश्रण प्रस्तुत किया गया हो। वास्तव में, यूहन्ना 19:28-30 से हम जानते हैं कि, मृत्यु से थोड़ा पहले ही, यीशु को सिरका अर्थात एक तीखी दाखमधु प्रस्तुत की गई थी और उसने उसे लिया भी था।

यदि मत्ती और मरकुस एक ही घटना की बात कर रहे हों तो भी इसमें विरोध नहीं माना जाना चाहिए। ''पित्त'' किसी भी कड़वी वस्तु को कहा गया हो सकता है। गंधरस, यद्यपि अपनी सुगंधी के लिए प्रसिद्ध है, परन्तु इसका स्वाद बहुत ही कड़वा होता है। गंधरस के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''myrrh'' अरबी भाषा के शब्द *मुर्र* (''कड़वा'') से लिया गया है जो हमारी हिन्दी की बाइबल (मरकुस 15:23) में भी मिलता है।

मत्ती ने हमें यह नहीं बताया कि पित्त में क्या-क्या डाला गया था। मरकुस ने यह कहकर स्पष्ट कर दिया कि वह कड़वा पदार्थ मुर्र था। मत्ती और मरकुस में विरोध ढूंढ़ने के बजाय हम पुन: देखते हैं कि इनका अन्तर ज़ोर देकर कहता है कि उन्होंने एक दूसरे से परामर्श लेकर नहीं लिखा था।

चार अभिलेख। सुसमाचार के हर लेखक ने यीशु के सिर पर रखे पीलातुस के अभिलेख को अलग-अलग लिखा है, इसलिए कुछ लोग इन लेखों की भी आलोचना करते हैं। परन्तु, कथनों को अलग-अलग शब्दों में अनुवाद करने पर भी वे सही हो सकते हैं। तीन भाषाओं में लिखा गया कथन एक जैसा नहीं होगा। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि सुसमाचार के लेखकों ने उन्हीं शब्दों को ज्यों का त्यों लिख दिया हो। समझने के लिए, वे एक ही शब्द हैं: ''यहूदियों का राजा।'' फिर तो ये चार अभिलेख सुसमाचार के लेखकों के विरुद्ध प्रमाण होने के बजाय, स्वतन्त्र और विश्वसनीय लेखनों के सशक्त प्रमाण हैं।

मन्दिर को ढहाना। स्वतन्त्र और विश्वसनीय लेखन का प्रमाण ठट्ठे में भी मिलता है ''हे मन्दिर के ढहाने वाले और तीन दिन में बनाने वाले, अपने आप को तो बचा'' (मत्ती 27:40)। यह कथन (जिसे मत्ती और मरकुस ने लिखा, परन्तु यूहन्ना ने नहीं) क्रूस पर ठट्ठा करने वालों का था। उनका यह ठट्ठा अवश्य ही उस बात के लिए होगा जो यीशु ने पहले कही थी, फिर भी यीशु की कही बात को मत्ती और मरकुस में देखना व्यर्थ ही है। यूहन्ना ने क्रूसारोहण के इस ठट्ठे को लिखा तो नहीं परन्तु यूहन्ना 2:19 में हम पाते हैं कि यीशु ने यह बात तीन वर्ष पहले कही थी जिसके कारण उन्होंने क्रूस के समय उसका ठट्ठा किया।

भविष्यवाणी की सच्ची बात

नये नियम के लेखकों द्वारा इस्तेमाल की गई भविष्यवाणियों के पूरा होने की घटनाएं सुसमाचार की प्रमुख अभिपुष्टि हैं। क्रूसारोहण के सम्बन्ध में हमें कम से कम ग्यारह भविष्यवाणियां मिलती हैं। जिनमें से कुछ की चर्चा पहले ही की जा चुकी है:

1. *बलिदान के लिए ले जाए जाने वाला विरोध नहीं करेगा*
   (यशायाह 53:7; यूहन्ना 18:8; 1 पतरस 2:23, 24)
2. *मृत्यु कैसे होगी*
   (भजन 22:16; जकर्याह 12:10; यूहन्ना 12:32, 33; 18:31, 32; 19:37 भी देखिए)[6]
3. *अपराधियों के साथ*
   (यशायाह 53:12; मरकुस 15:28)
4. *कपड़े बांटे गए*
   (भजन 22:18; यूहन्ना 19:23-25)[7]
5. *अपराधियों के लिए बिनती*
   (यशायाह 53:12; लूका 23:34)

6. *एक चिल्लाहट*
   (भजन 22:1; मत्ती 27:46)
7. *ठट्ठे*
   (भजन 22:7, 8; मत्ती 27:39-44)
8. *पित्त*
   (भजन 69:21; मत्ती 27:34)
9. *सिरका*
   (भजन 69:21; यूहन्ना 19:28-30)
10. *आत्मा का सौंपना*
    (भजन 31:5; लूका 23:46)
11. *कोई हड्डी न टूटी*
    (भजन 34:20; यूहन्ना 19:36)

क्रूस का परिणाम

क्रूस देने का अर्थ है खूंटे पर चढ़ाना, पेड़ पर ठोंकना। यीशु के क्रूसारोहण के विषय में लिखा गया है कि उसे घायल किया गया, उस पर थूका गया, त्यागा गया, बेधा गया और कुचला गया (यशायाह 53:3-7)। उसके प्राण पर भारी कष्ट पड़ा उसे मिलावटी मय पिलाई गई, उसने इन्कार कर दिया। उसने तेज़ और न रुकने वाले दर्द को सहने की ठान रखी थी, क्योंकि उसने पहले ही कहा था, ''जो कटोरा पिता ने मुझे दिया है क्या मैं उसे न पीऊं?'' (यूहन्ना 18:11)।

शारीरिक पीड़ा के अलावा उसने ठट्ठा, उपहास, और बुरी दृष्टि को भी सहन किया था। यदि पूरी तरह से नहीं, तो भी उसे लगभग नंगा कर दिया गया था और लोगों के सामने अपमानित किया गया था। मृत्यु ''हां, क्रूस की मृत्यु'' (फिलिप्पियों 2:8) का अपमान और दाग़ उसे झेलना पड़ा था क्योंकि क्रूस पर केवल हत्यारों, चोरों तथा बाहर के लोगों को चढ़ाया जाता था।

शारीरिक पीड़ा और अपमान के बावजूद, यीशु को जो बात आहत करती थी वह परमेश्वर की ओर से उसे त्यागा जाना था। प्यासे, सूखे और शायद फूले हुए होंठों से उसने परमेश्वर को बड़े ज़ोर से पुकारकर पूछा कि उसने उसे क्यों छोड़ दिया है। यद्यपि परमेश्वर उसे त्यागना नहीं चाहता था जो हमेशा अपने पिता को प्रसन्न करता था, परन्तु यदि वह क्रूस पर लटके यीशु को अपना लेता तो सब कुछ खो जाना था। किसी को तो बलि का बकरा बनना ही था अर्थात किसी को तो पाप बनना ही पड़ना था। जब परमेश्वर के प्रिय पुत्र के रूप में सारे संसार का पाप क्रूस पर लटका हुआ था, तो परमेश्वर के लिए उस दृश्य से मुंह फेरना आवश्यक था। उसकी पवित्रता और शुद्धता पाप को सहन नहीं कर सकती थी। वृक्ष पर लटकाया जाने वाला चाहे कोई भी हो, वह परमेश्वर का शापित था (गलतियों 3:13)। जब यीशु ने अपने प्राण मृत्यु के लिए उंडेल दिए तो परमेश्वर ने दिन के प्रकाश को समाप्त करके यीशु को त्याग दिया था।

यीशु ने उनके लिए जो मारे जाने के योग्य थे, अपने आपको पीड़ा, अपमान और पापी बनने को स्वीकार करने के लिए बाध्य किया था! वह इससे बच सकता था अर्थात स्वर्गदूतों की सेनाओं को बुला सकता था। यह ठट्ठा कि उसने दूसरों को बचाया परन्तु अपने आपको नहीं बचा सका, सही नहीं था क्योंकि वह अपने आपको बचा सकता था। एक अर्थ में जो उसके ठट्ठा करने वाले नहीं चाहते थे, उनकी बातें सत्य थीं: यदि यीशु दूसरों को पाप और मृत्यु से बचाना चाहता था तो वह अपने आपको मृत्यु से नहीं बचा सकता था। उसे दोनों में से एक को चुनना था और उसने अपनी जान देना उचित समझा ताकि दूसरे लोग बचाए जा सकें। उसने अपने पिता से कोई और मार्ग ढूंढ़ने के लिए कहा, और अपने पुत्र की खातिर परमेश्वर उसे मृत्यु से बचा सकता था, परन्तु मनुष्य जाति के लिए उसका प्रेम आगे आ गया था।

यीशु ने न केवल उनके लिए जिन्होंने उसकी बातें मानीं, बल्कि अज्ञानियों और दूर-दूर तक रहने वालों, विद्रोह करने वालों और पापियों, खोए हुओं और नाश होने वालों के लिए, उनके लिए भी जो परमेश्वर से रहित और इस जगत में आशा रहित थे, कष्ट सहा। प्रेम सबसे ऊपर था; स्याही से लिखे शब्द उसकी व्याख्या कितने अपर्याप्त ढंग से करते हैं!

सारांश

मसीह का क्रूस शक्तिशाली और प्रबल है, फिर भी यदि हम क्रूस पर नहीं चढ़ते तो जो प्रेम उसमें दिखाया गया है वह व्यर्थ है अर्थात किसी काम का नहीं। जब तक हम अपनी सांसारिक इच्छाओं के लिए मरते नहीं, यीशु का क्रूस भी हमें बचा नहीं सकता (देखिए रोमियों 8:13)। जब तक पुराने मनुष्य को क्रूस पर नहीं चढ़ाया जाता तब तक बपतिस्मे के सुन्दर समारोह में फिर से जी उठना व्यर्थ ही है! (देखिए रोमियों 6:3-6.) सच्चे मसीही मसीह के साथ क्रूस पर चढ़े हैं (गलतियों 2:20)।

पाद टिप्पणियां

[1]सी. जी. विल्के एण्ड विलिबल्ड ग्रिम, *ए ग्रीक-इंग्लिश लेक्सिन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेन्ट अनु. व संसो. जोसेफ एच. थेयर।* [2]अलबर्ट बार्नस, *मैथ्यु एण्ड मार्क,* नोट्स ऑन द न्यू टैस्टामेन्ट। [3]जे. डब्ल्यू मैक्गार्वे, *मैथ्यु एण्ड मार्क,* द न्यू टैस्टामेन्ट कमेन्ट्री, vol. 1। [4]मरकुस डॉड्स, *द एक्सपोज़िटर' स ग्रीक टैस्टामेन्ट,* सम्पा. डब्ल्यू. रॉबर्टसन निकोल, vol. 1 में ''द गॉस्पल ऑफ़ सेंट जॉन।'' [5]अलबर्ट बार्नस, *लूक एण्ड जॉन,* नोट्स ऑन द न्यू टैस्टामेन्ट। [6]यह विचार करने पर कि प्राण दण्ड देने का यहूदियों का साधारण ढंग पथराव था और यह भविष्यवाणी कि यीशु क्रूस पर चढ़ाया जाएगा और भी अधिक आश्चर्यजनक हो जाती है। [7]इस भविष्यवाणी में यह विशेष बात है कि कपड़ों का बांटा जाना और चिट्ठी डालना एक ही कपड़े के लिए है।